मनु संहिता ही ठीक थी, उसे लागू किया जाए, यही सर्वोत्तम मार्ग होगा: तरूण सागर

इस बार अमलेश प्रसाद का विशेष कॉलम: फेक एनकाउंटर

जैन मुनि तरुण सागर महाराज को मैंने धार्मिक चैनलों पर प्रवचन करते हुए पहले देखा था और मुझे वह बहुत मनोरंजक लगा था। जिस अंदाज़ में वे बोलते हैं, उनके वाक्यों में जो उतार-चढ़ाव आते हैं और कभी-कभी जब वो चीखने लगते हैं तो स्क्रीन पर एक ज़बर्दस्त नाटकीयता पैदा होती है। इससे बच्चों-बूढ़ों सभी के लिए हास्य भी पैदा हो जाता है। मैंने ये भी सुना है कि उनकी इस शैली को जैन समुदाय में बहुत पसंद भी किया जाता है और वे बहुत लोकप्रिय हो चुके हैं, बिल्कुल किसी सेलिब्रिटी की तरह। ये भी सही है कि उनके वचन कड़वे होते हैं, हालाँकि किसी बुद्धि-विवेक वाले को शायद ही जँचें। लेकिन ज़ाहिर है कि खट्टर काका उनके मुरीद हैं इसीलिए उन्होंने विधानसभा के मानसून सत्र के प्रारंभ में डेमोक्रेसी का बैंड बजाते हुए उनका प्रवचन करवा दिया।

मुझे बताया गया था कि मुनि महाराज मीडिया प्रेमी हैं और टीवी-अखबारों से उनका विशेष लगाव है। इसीलिए जब मैंने एक जैन मित्र के ज़रिए उनके एनकाउंटर के लिए समय माँगा तो फौरन हाँ में जवाब आ गया। मैं उनसे मिलने पहुँचा तो उस समय वहाँ टीवी चैनलों के रिपोर्टरों की भीड़ लगी हुई थी और मुनि महाराज प्रसन्न मुद्रा में बाइट पर बाइट दिए जा रहे थे। जब वे उनसे फारिग हुए तो मेंने बातचीत शुरू की।

प्र. तरूणजी...

(बात काटते हुए) तरूण सागर महाराज जी...

प्र. वे आप अपने भक्तों के लिए होंगे, मैं तो तरूण जी ही कहूंगा। तो तरूण जी विधानसभा में आपके भाषण को लेकर बड़ा विवाद हो गया है। कहा जा रहा है कि ये लोकतंत्र के खिलाफ़ है। आपको वहाँ बुलाकर लोकतंत्र की मर्यादा का हनन किया गया है?

जिस सदन में पता नहीं कितने आपराधिक पृष्ठभूमि के लोग बैठे होंगे, मेरे जाने से उसकी मर्यादा भंग कैसे हो गई?

प्र. विधायी कार्य संविधान में दिए गए दिशा-निर्देशों से चलना चाहिए न कि साधु-संतों की वाणी से या किसी धर्म के नियम कायदों से इसलिए?

तो मैं भी तो लोकतंत्र का हिस्सा हूँ।

प्र. लोकतंत्र के तो सभी हिस्से हैं। लेकिन सबकी ज़िम्मेदारियाँ तो अलग-अलग होती हैं न?

वो कैसे?

प्र. हम वोट दे सकते हैं, अपनी पसंद की सरकार चुन सकते हैं। जन प्रतिनिधियों को ठीक से काम करने के लिए आंदोलन भी चला सकते हैं, मगर विधानसभाओं और संसद में जाकर भाषण नही दे सकते?

मेरी समझ में नहीं आ रहा कि इसमें मेरी ग़लती कहा है। अगर ग़लती की भी तो सीएम ने की, हरियाणा सरकार ने की। मैं तो संत हूँ, जहाँ बुलाया जाता है चला जाता हूँ।

प्र. उन्होंने तो निश्चय ही ग़लती की लेकिन लोग मानते हैं कि आपने भी की। आप तो जैन मुनि हैं। जैन धर्म के अनुसार मुनियों को इस आसार संसार से लेना-देना नहीं होना चाहिए। उन्हें तो आत्म कल्याण के लिए साधना करनी चाहिए, इस नश्वर संसार के कार्य-व्यापार में नहीं उलझना चाहिए। इस लिहाज़ से आपने क्या जैन धर्म की मर्यादा का भी उल्लंघन नहीं किया है?

देखिए मैं तो धर्म का प्रचार कर रहा हूँ, जन कल्याण के लिए काम कर रहा हूँ। जन कल्याण से ही आत्म कल्याण करने के मार्ग पर चल रहा हूँ।

प्र. आपने संतों-साधुओं के लिए विधायी कार्यों को प्रभावित करने का रास्ता खोल दिया है, जो लोकतंत्र के लिए हितकारी नहीं माना जा रहा?

वो कैसे?

प्र. अब तो कोई साधु वहाँ जाकर ये भी कहने लगेगा कि मनु संहिता ही ठीक थी, उसे लागू किया जाए।

इसमें बुराई क्या है। हमारे शास्त्रों के हिसाब से समाज चले यही सर्वोत्तम मार्ग होगा।

प्र. फिर तो संविधान की ज़रूरत ही नहीं रहेगी? आईपीसी, सीआरपीसी भी ख़त्म कर दी जानी चाहिए, बल्कि अदालतों को ही बंद कर दिया जाना चाहिए?

हाँ, क्यों नहीं। हमें इन सबकी जरूरत ही नहीं है। सब कुछ शास्त्रों और धर्मों के हिसाब से चले तो सब कुछ ठीक हो जाएगा।

प्र. यानी हमें दो हज़ार साल पीछे चला जाना चाहिए?

पीछे जाकर ही हमारा उद्धार होगा।

प्र. शायद इसीलिए आपके जाने का विरोध हो रहा है। लोग आगे जाना चाहते हैं और आप पीछे खींच रहे हैं?

मुझे जो धर्मसम्मत लग रहा है और जो मेरी बुद्धि कहती है, मैं कह रहा हूँ।

प्र. लेकिन क्या जैन धर्म इसकी अनुमति देता है?

मैं इसकी परवाह नहीं करता। धर्म की ये मेरी व्याख्या है। समय के हिसाब से धर्म भी बदलता है और साधु-संतों की भूमिका भी बदलती है।

प्र. तो आप जैन धर्म को बदल रहे हैं?

(थोड़ा हकलाते हुए) नहीं, नहीं मैं तो धर्म को पुनर्पभाषित करने की चेष्टा कर रहा हूँ। मैं तो कहता रहता हूँ कि घर को सौ साल में गिरा देना चाहिए और धर्म को एक हज़ार साल में ख़त्म कर देना चाहिए। जैन धर्म तो ढाई हज़ार साल पुराना हो चुका है, उसकी एक्सपायरी डेट निकल गई है।

प्र. आप जैन धर्म की मूल स्थापनाओं अपरिग्रह, अहिंसा, अस्तेय, अचौर्य आदि से ही हटते दिख रहे हैं। लेकिन मैं धार्मिक मामलों में नहीं पड़ूँगा। आपने जो कुछ कहा उस पर आपसे कुछ सवाल जरूर करना चाहूँगा, क्योंकि उसको लेकर काफी विवाद हो रहा है। ये बताइए कि आपने धर्म को पति राजनीति को पत्नी बताया है, क्या ये ठीक है?

हाँ, बिल्कुल। धर्म कंट्रोल करेगा तो राजनीति धर्मानुसार चलेगी नहीं तो पागल हाथी की तरह मदमस्त हो जाएगी।

प्र. किस धर्म के अनुसार चलेगी? हिंदू, मुसलमान, जैन, सिख, ईसाई...किस धर्म के अनुसार?

सभी धर्मों के अनुसार.....

प्र. ये तो संभव ही नहीं है क्योंकि झगड़ा ही पूरी दुनिया में इसी वजह से हो रहा है। सब धर्म अपने हिसाब से देशों को चलाने की कोशिश कर रहे हैं?

मेरा विरोध करने वाले क्या चाहते हैं कि राजनीति को धर्म से मुक्त कर दिया जाए?

प्र. लोकतंत्र का तकाज़ा तो यही है। राजनीति में धर्म घुसेड़ने की वजह से ही दंगे-फसाद हो रहे हैं। वैसे भी लोकतंत्र में राजनीति को जनता नियंत्रित करती है, वही तय करती है कि देश में क्या होना चाहिए। आप जो सुझाव दे रहे हैं वह सामंतवाद के दिनों में होता था, राजा-महाराजाओं के ज़माने में होता है? लोकतांत्रिक राजनीति में धर्म की मिलावट नफरत और हिंसा पैदा कर रही है?

आप साधु-संतों को राजनीति से बाहर कर देना चाहते हैं?

प्र. साधु-संतों को राजनीति से क्या लेना-देना उन्हें तो भगवान के ध्यान में मन लगाना चाहिए। खैर आपके भाषण के कुछ और अंशों को आपत्तिजनक माना जा रहा है?

जैसे?

प्र. जैसे आपने कहा कि पति को चाहिए कि पत्नी को नियंत्रण में रखे और पत्नी पति का अनुशासन माने। अब ज़माना बदल गया है। पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था को सब नकार रहे हैं। अब मर्द नारी का मालिक नहीं होता, स्त्री-पुरुष बराबर माने जाते हैं। स्त्री किसी की दासी नहीं होती जो उसको नियंत्रित किया जाए?

देखिए इसीलिए तो समाज का पतन हो रहा है। अगर औरतें बेलगाम होती रहीं तो स्थितियाँ और भी बिगडेंगी।

प्र. लोगों का मानना है कि स्थितियाँ इसलिए खराब थीं कि मर्द औरतों को दबाकर रखते थे। अब ये तभी बेहतर होंगी जब उन्हें बराबरी का हक़ और सम्मान मिलेगा?

आप तो उल्टी गंगा बहाने की बात कर रहे हो। संत समाज इसकी इजाज़त नहीं दे सकता।

प्र. आपसे इजाज़त कौन माँग रहा है? संविधान ने पहले ही ये दे रखा है और आप लोगों के विरोध के बावजूद वह उन्हें मिलता जा रहा है। वैसे बहुत से लोगों को ये भी अच्छा नहीं लगा कि आप निर्वस्त्र होकर विधानसभा में गए?

मैं निर्वस्त्र होकर नहीं गया, बल्कि मैं इसी तरह नग्न रहता हूँ। मैं दिगम्बर जैन मुनि हूँ, जिसमें साधुगण वस्त्र धारण नहीं करते।

प्र. लेकिन मुनिगण तो ऐसी सभाओं में भी नहीं जाते, उन्हें सांसारिक कार्य-कलापों से दूर रहना चाहिए? बहरहाल, लोगों को लगता है कि ये अश्लील था?

अश्लीलता तो लोगों की आँखों में होती है, उनके दिमाग़ में होती है। जो साधु-संतों के शरीर में अश्लीलता देखते हैं उनके मन अश्लील हो चुके हैं।

अगर ऐसा है तो आप लड़कियों के वस्त्रों में बुराई क्यों देखते हैं? इस हिसाब से तो लड़कियों के वस्त्रों में कोई खोट नहीं होती बल्कि जो उनके साथ बदतमीज़ियाँ करते हैं उनके मन में, उनके दिमाग़ों में होती हैं?

हाँ ये तो सही है,

दामोदरदास मोदी को 2014 में देश का प्रधानमन्त्री बनने के बाद विदेश यात्रा पर निकलने से पहले ऐसे सपने लेने की लत पड़ गयी है !

सरकारी संरक्षण से ही होता है अतिक्रमण

करनाल (प्रवीण कुमार) एक तरफ तो हरियाणा सरकार सी एम सीटी करनाल को सम्राट सीटी बनाने के बड़े-बड़े दावे किये जा रहे है दूसरी ओर शहर की सरकार की कार्य प्रणाली हरियाणा सरकार के दावों की फूंक निकालने में लगी हुई है ।

नगर के मुख्य बाजारो में दुकानदार द्वारा अपने सामने की सड़के कब्जा रखी है । जगह-जगह रेहड़ी फड़ी वालों ने व तमाम जगह घेर रखी है जिस पर राहगीरों का हक बनता है या गाड़िया पार्किंग की जा सकती है। परन्तु दुकानदारों ने अपनी दुकानों के सामने की जगह रेहड़ी फड़ी वालों के किराये पर दे रखी है, जिसकी वजह से हर तरफ जाम की स्थिति बनी रहती है। यही कारण है कि आये दिन पार्किंग को लेकर दुकनदारों व राहगिरों में झगड़े की स्थिति बनी रहती है जो बाद में मारपीट में बदल जाती है ।

शहर में अवैध अतिक्रमण पर लगाम कसने की जिम्मेदारी शहर की सरकार यानी नगर निगम की मानी जाती है जिसका कार्य है जिला प्रशासन की मदद से शहर के अतिक्रमण को हटाना परन्तु शहर का दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है कि शहर के प्रसिद्ध व्यसायी की धर्मपत्नी भी है और उनके पति व्यापारी वर्ग से खासकर प्रमुख दुकानदारों में उठ बैठ है इसी वर्ग के बहुत से लोगों को व अपने वोट बैंक के रूप में भी देखते है यही कारण है कि अवैध अक्रिमण करने वाले व करवाने वाले दुकानदारो के विरूद्ध ढुलमुल कार्रवाई की जाती है ।

आज के दिन शहर की दुर्दशा किसी से छुपी नहीं है लेकिन न तो प्रशासन को और न ही सामाजिक संस्थाओं व जनप्रतिनिधियों को आम आदमी की शहर में फैली अव्यवस्थाओं से कोई लेना देना है। कहीं न कहीं प्रशासन दबाव में है और उसी के चलते समय पर कार्यवाही नहीं करता इसका जीता-जागता उदाहरण है शहर के नेहरू पैलेस, दुपट्टा मार्किट, कर्ण गेट और अन्य बाजारों में लोगों ने सरेआम सड़कों पर अतिक्रमण किया हुआ है जिसके चलते लोगों का शहर की सड़कों पर चलना दूभर हो गया है। नेहरू पैलेस कर्णगेट चौक मेन बाजार में व्यापारियों ने न केवल बरामदों को कब्जा कर उन पर सामान रखा हुआ है बल्कि सड़कों पर भी कब्जे किए हुए हैं और दुकानदारों ने पूरे बाजार में दुकानों के सामने या तो स्वयं सामान रखा हुआ है या फिर जगह किराए पर दी हुई है

उल्लेखनीय है कि दुपट्टा मार्किट, को जाते रास्ते में खादी भण्डार की बिल्डिंग के इर्द गिर्द रेडिमेड की फड़ियां लगा रखी है । जिनका किराया 10-10 हजार रू महीना खादी भण्डार ले रहा है। लेकिन प्रशासन को यह सब नजर नहीं आता और कहीं न कहीं लगता है कि प्रशासन व्यापारियों के दबाव में है जिसके चलते कार्यवाही नहीं की जाती। अन्यथा प्रशासन चाहे तो रातों रात कार्यवाही हो सकती है। प्रशासन जब कभी कार्यवाही करता है तो वह केवल दिखावा मात्र होती है।

गौरतलब है कि नगर सुधार मण्डल ने अदालत में भी यह माना है कि नेहरू पैलेस में बरामदे लोगों के चलने के लिए है न कि व्यापारियों के सामान रखने के लिए। इस मामले में कोर्ट ने भी कड़ा संज्ञान लिया है लेकिन अधिकारी कोई कार्यवाही नहीं कर रहे।

उल्लेखनीय है कि गत वर्ष एडवोकेट राजेश शर्मा ने आरटीआई में इन्क्रोचमैन्ट हटाने की सूचना मांगने पर नेहरू पैलेस में नगर सुधार मण्डल ने कारवाई की थी तब सभी कब्जाधारी तितर-बितर हो गये थे परन्तु अगले दिन फिर ज्यों का त्यों कब्जाधारी फिर आज तक कब्जा जमा कर बैठे हुये हैं ।

इस संवाददाता ने नगर सुधार मण्डल के कार्यकारी अभियन्ता महीपाल से पूछा कि पुन: इन्क्रोचमैन्ट हो गई है तो उस पर आप कारवाई क्यों नही करते । महीपाल ने अपने दोनों हाथों को ऊपर उठाते हुये कहा कि मेरे हाथ खड़े है मै कुछ नही कर सकता। हम इन्क्रोचमैन्ट हटाने गये थे तो व्यापारियों के प्रधान तनेजा सारा बाजार इकट्ठा कर लिया और पुलिस व अफसर तमाशा देखते रहे हमें पिटना नही है ।

जबकि एक दुकानदार ने नाम न प्रकाशित करने की शर्त पर बताया कि कब्जाधारी फड़ी वालो से अधिकारियों से मन्थली बांध रखी है इसलिये कारवाई नही करते । अगर मंथली न ले रहे होते तो यही अधिकारी सरकारी कार्य में ड्यूटी में बाधा डालने की कानूनी कारवाई कर इन्क्रोचमैन्ट हटा सकते थे ।

गत वर्ष आरटीआई कार्यकर्ता एडवोकेट राजेश शर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि शहर में फैली इस अव्यवस्था के संदर्भ में कुछ समय पूर्व एसडीएम को लीगल नोटिस भी दिया गया था लेकिन आज तक न तो नेहरू पैलेस के बरामदे खाली हुए है और न ही दुपट्टा मार्किट और अन्य बाजारों से अतिक्रमण हटाया गया है जिसके चलते आज के दिन शहर में यातायात व्यवस्था चरमराई हुई है।

सरकार अपनी तरफ से अतिक्रमण हटाने के लिये अधिकारियों को दिशा-निर्देश तो देती है लेकिन धरातल पर इसका कोई असर नहीं होता। नगर निगम के अधिकारी कभी कभार ट्रैक्टर ट्राली लेकर आते है और रेहड़ी फड़ी वालों को बार-बार सामान हटाने के निर्देश दे कर चले जाते हैं जैसे ही अधिकारी आगे चले जाते है फिर उसी तरह रेहड़ी फड़ीयां फिर सज जाती है । इसी तरह महीने बाद फिर आते है उन्ही को सामान हटाने (आगे पीछे करने)के निर्देश देकर चले जाते है और कोई कारवाई नही करते।

गौरतलब है कि पटेल कलाथ मार्कीट के ओल्ड जी टी रोड के चौंक पर जहां आने जाने का रास्ता है एक रेहड़ी वाला रेहड़ी पर हथोड़ी, पेचकस चाबियां जो नट बोल्ट खोलने व शटर तोड़ने के काम आती है बेचता है नम्बर दो में जो कि दिल्ली से लोकल व केन्द्रीय बिक्री कर चोरी करके बेचता है ।

पटेल मार्कीट से पट्रोल पम्प के जाने वाले रास्ते पर वाहनों का परेशानी रेहड़ी के कारण परेशानियों का सामाना करना पड़ता हैं जिस कारण कई बार दुर्घटायें भी हुई लेकिन रेहड़ी न हटी परन्तु रेहड़ी वाले ने आने जाने वाले दोनों ग्रीलों के बीच में एक लोंहे का जंगला लगा कर उस पर ताला जड़ दिया ताकि रेहड़ी न हटानी पड़े। यहां तक कि रात के समय रेहड़ी को ताला लगा कर सरे आम सड़क चौंक के बीच ताला लगा कर चला जाता है । लेकिन अन्धे प्रशासन अन्धी ट्रैफिक पुलिस अन्धा नगर निगम को कुछ भी दिखाई नही देता। जबकि उसी जगह वहीं चौक पर ट्रैफिक पुलिस जिप्सी लेकर बैठी रहती है।